# मााँ दर्ाा की स्तुतत



**डॉ हिमाशु शेखर**

11, नेकलेस एररया, आमाामेंट कालोनी पाषाण, पुणे – 411021

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 1

विषय क्रम

[स्ततु त प्रस्तािना 4](#_bookmark0)

[जय महिषासरमहदता न माता 4](#_bookmark1)

[जय माता कात्यायनी 6](#_bookmark2)

[माता और विज्ञान 8](#_bookmark3)

[शखर कृ त माां दर्ाा चालीसा 10](#_bookmark4)

[निरात्रा में जय जय माता 18](#_bookmark5)

[दसाितार माां की स्ततु त 21](#_bookmark6)

[शलपत्र](#_bookmark7)

[ी सध्](#_bookmark7)

[या िद](#_bookmark7)

[न 21](#_bookmark7)

[ब्रह्मचाररणी िदन 23](#_bookmark8)

[चांद्रघटा माता की स्ततु त 24](#_bookmark9)

[कू षमाांडा माता की स्ततु त 26](#_bookmark10)

[स्कां दमाता स्ततु त 28](#_bookmark11)

[कात्यायनी माता की िदना 31](#_bookmark12)

[कालरात्रत्र की आराधना 33](#_bookmark13)

[मिा अषटमी पजन 35](#_bookmark14)

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 2

[ससद्धधदात्री स्ततु त 37](#_bookmark15)

[अिांकारासर](#_bookmark16)

[......................................................................... 40](#_bookmark16)

[फु टकल स्ततु त 42](#_bookmark17)

[हदल माता का उपिन 42](#_bookmark18)

[माता का विचरण 43](#_bookmark19)

[माता से पकार 44](#_bookmark20)

[दफ्तर में देिी माां 49](#_bookmark21)



हिमाांशु शख

र कृ त दर्

ाा स्तुतत 3

# स्तुतत प्रस्तािना

जय महिषासुरमहदातन माता

जय महिषासुर महदानी माता, शक्ततपांुज ऊजाा की दाता,

िर तलेश को दर भर्ाता,

भक्तत से अब जोड़ो नाता, नाम जपो करके जर्राता । जय महिषासुरमहदातन माता ।।

निरात्रा का शुभ हदन आता,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 4

पुलककत िर हदल िोकर र्ाता, शुभ िोर्ा िर सांकट जाता, जय जय िे जर्दम्बे माता ।

जय महिषासुर महदानी माता ।।

प्रकृ तत में आनांद समाता, खर् सांुदर सांर्ीत सुनाता, जीि-जांतु भी शाांतत पाता,

जब सातनध्य में आएां माता । जय महिषासुर महदानी माता ।।

ध दीप सब पािन भाता,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 5

पुषपाांजसल अपण िै माता,

जब प्रसाद चरणामत पाता,

तप्त हृदय सखु -शाांतत पाता ।

जय महिषासुरमहदातन माता ।।

जय माता कात्यायनी

जय जय जय माता कात्यायनी, जय ससििाहिनी, जय नारायणी।। कषट चतुहदाक, नषट करो माां,

रोर्, दोष से, मुतत करो माां,

तन मन दोनों पुषट करो माां,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 6

िर देकर, सांतुषट करो माां। जय जय जय माता कात्यायनी, जय ससििाहिनी, जय नारायणी।।

बाधाओां का शमन करो माां, शत्रु का अब दमन करो माां, बांजर भू को चमन करो माां, पुलककत िो रमण करो माां।

जय जय जय माता कात्यायनी, जय ससििाहिनी, जय नारायणी।। जर् का तनत कल्याण करो माां, शुषक हृदय में प्राण भरो माां,

िचनों में ग्रांथ पुराण भरो माां,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 7

शुभ प्रकाश तनमााण करो माां। जय जय जय माता कात्यायनी, जय ससििाहिनी, जय नारायणी।।

माता और विज्ञान

आहद शक्तत तयों िैं माता? विज्ञान इसे यूां समझाता। डीएनए की लर्ी कतारें, र्ुणसूत्र मूल िैं बतलाता।

उससे िी विकास, िद्धध सा

काया कोई भी कर पाता।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 8

सांततत की अनुिाांसशक सारी खोज ििीां से िै आता। माता और वपता से बच्चा आधे आधे र्ुण पाता।

पर ऊजाा िाली डीएनए

तो माता से िी िै पाता। माता से आती आई िै, ऊजाा िो ये समझाता।

इससलए तो म ऊजाा का

स्रोत िुईं िैं जर्माता।

आहदशक्तत िी म स्रोत

िैं, ऊजाादायी िैं माता।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 9

शेखर कृ त माां दर्ाा चालीसा

निरात्रा की नौ हदन प ा,

माां दर्ाा की तनत कर प ा।

िर हदन रूप अलर् िी पािे, सब में बस माता को ध्यािे।

श्रद्धा, भक्तत, मन से प ा, रोर्, कषट, तनिारण पजू ा।

शक्तत, ससद्धध, सुख ले आिे, माता को हदल में जब लािे।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 10

शक्तत, ऊजाा, सब आ जािे, हदल में उनके चरण विराजे। काया सभी अब पूणा िो जाते, नौ हदन भक्तत करते जाते।

माता ने असुरों को मारा, ककतने थे, सबको सांिारा। तीन रूप में शस्त्र उठाए, चांद्रघण्टा से राक्षस धाए।

कालरात्रत्र, कात्यायनी बन,

माता माांर्े असुर सपपण।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 11

रततबीज, दर्ु चण्ड, मुण्ड मत्

म भी िारा, यु का चारा।

शैलपुत्री बन कर समझाया, दहु िता का भी धमा बताया।

पित पर िै प्रकट भिानी,

ससि

स्थ िुईं आ र्ई भिानी।

पांचम हदिस रूप से माता, पुत्र भी योद्धा जना िे माता। स्कां दमाता की उपमा आई, स्नेि, आशीष साथ ले आई।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 12

तप कर अपने ईषट को पाना, मिार्ौरी बन यिी बताना। दृढतनश्चय कर ईक्च्ित पा ले, यिी समझ िो जर् में डाले।

ब्रह्मचाररणी बन माता रानी, तप से शक्तत समले बतानी। सलया कमण्डल, माला धारी, करें तपस्या िर नर-नारी।

सक्ृ षट करना जब आिश्यक,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 13

माां कू षमाण्डा िैं फलदायक। नौिें हदन माां ससद्धधदात्री बन,

ससद्धध प्रदत्त िै िवषत जीिन।

भोर् अलर् ये सारे लो धर्न,

िलिा पूरी चढे एक हदन। अषटम हदिस चना िै काला, निमी को िै धान का लािा।

रांर्ों का भी साथ िै अनुपम, श्िेत िस्त्र जब हदन िै पांचम। लाल फू ल और िैसा चांदन,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 14

से कात्यायनी माता िांदन।

माता ने िर रांर् िै डाले, र्ोरी िैं तो कभी िैं काले। सप्तम, अषटम को िैं काला, र्ौड़ िणा षषठी को पाला।

नौ रूपों का दृश्य मनोरम, विजयादशमी आई उत्तम।

मन माता प्रततमा जब बनता, भक्तत सार्र आज उफनता।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 15

प्रततमा का भी करो विसजन,

पर मन प्रततमा रिे धचरांतन।

जीिन अपना करो समपण,

माता का, माता को अपणा ।

िे माता! तुम अांतयाामी,

मैं म ख, इच्िु क, फलकामी।

जर् को थोड़ा सुन्दर करना, डर, शांका, पीड़ा सब िरना।

मुझको िो देना जो समुधचत, माांर्ूर्ा कु ि भी तो अनुधचत।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 16

इससलए बस िांदन करता, स्तुतत के सांर् मांर्ल करता।

आप मुझे तो जाने माता, मुझमें ककतने दोष समाता। ठीक करूां तया िोड़ू माता,

ये भी मुझको समझ न आता।

जो भी अच्िा िो सकता िै, त्रबन माांर्े िो समल सकता िै। यिी सोचकर करूां मैं िांदन,

त्रबना याचना के िल िांदन।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 17

मुझको के िल इतना देना, ज्ञान, ध्यान, सांज्ञान दे देना। जबतक तन में प्राण रिे, माता चरणों में स्थान रिे।

निरात्रा में जय जय माता

निरात्रा में जय जय माता, नौ रूपों से जोड़े नाता ।

शैलपुत्री ब्रह्मचाररणी माता, चांद्रघांटा, कू षमाांडा माता,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 18

पांचम हदिस स्कां द की माता, हदन िट्ठे कात्यायनी माता, कालरात्रत्र मिार्ौड़ी त्राता, ससद्धरात्रत्र निरूप सुिाता । निरात्रा में जय जय माता, नौ रूपों से जोड़े नाता ।

विविध दख

ों को दर

भर्ाता,

लखख लखख रूप नयन भर आता, मन में नूतन ऊजाा पाता,

जो भक्तत में डू ब िै जाता, भतत तुम्िारे दर पर आता,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 19

त्रबन माांर्े सब कु ि पा जाता । निरात्रा में जय जय माता, नौ रूपों से जोड़े नाता ।



हिमाांशु शख

र कृ त दर्

ाा स्तुतत 20

# दसाितार माां की स्तुतत

शैलपुत्री सांध्या िांदन

आर्मन माता का अनुपम,

म ा ना पर शक्तत सक्षम,

हदल बना पांडाल उसमें, माता का लिराए परचम।

हदल बजाए आज सरर्म,

भ ते सब आज िर र्म,

भक्तत में र्र लीन हदल तो,

आखें भी िो जाएांर्ी नम।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 21

शक्तत से काटेंर्ें िर तम, दमनकारी को करें कम, माता बस आ जाएां हदल में, कौन कर पाए ससतम?

दृश्य मनभािन वििांर्म, कषट अब िो जाएांर्े कम,

ससििाहिनी शैलपुत्री,

पिले हदन अवपत समनु ।



हिमाांशु शख

र कृ त दर्

ाा स्तुतत 22

ब्रह्मचाररणी िांदन

निरात्रा का दसरा हदन,

ब्रह्मचाररणी माां का धर्न,

तपस्या में िद्धध करनी,

भक्तत का िै आज हदन।

कमण्डल, माला सलए माां, तप का सांदेशा सलए माां,

कु ण्डसलनी िोर्ी जार्त,

कृ पा दृक्षट ककक्जए माां।

आज िद्धध तप की िोर्ी,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 23

त्यार् और सांयम की िोर्ी,

िैराग्य से नाता जुड़े और, सदाचारी मन की िोर्ी।

विजय ससद्धध सांर् पाओ, मन को चरणों में लर्ाओ, ब्रह्मचाररणी में रमो और, मन पररषकृ त करते जाओ।

चांद्रघांटा माता की स्तुतत चांद्रघांटा शस्त्रधाररणी,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 24

दनुजदल विनासशनी, कल्याणकारी रूप िै, ये सदा मांर्लकाररणी।

प्रथम िै जो शस्त्र धारे, तीसरे हदन िो पधारे, राक्षसों का नाश कर,

इस धरा को ििी तारे।

कर त्रत्रश , र्दा िै धारे,

धनुष और तलिार डारे, चांद्रघांटा माां से लड़कर,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 25

राक्षसों के झुांड िारे।

सौम्य शाक्न्त की डली माां, शेर पर चढकर चली माां, भाल का िो चाांद आधा, जर्त रौशन कर चली माां।

कू षमाांडा माता की स्तुतत

ब्रह्माांड रचतयता माता िै, आहद शक्तत जर्राता िै, चौथे हदन माां कू षमाांडा िी,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 26

आहदशक्तत सी त्राता िैं।

स ा मण्डल से नाता िै,

घर उनका किलाता िै, आांतररक लोक की प्रभा,

हदखाई देती िै िो माता िै।

िो तजपुांज जब आता िै,

सब रोर् दोष िां ट जाता िै, अषटभुजा दैिी प्रकाश, नयनों में निीां समाता िै।



हिमाांशु शख

र कृ त दर्

ाा स्तुतत 27

माता से सबकु ि आता िै, आयु, यश, साधक पाता िै, स्रषटा िैं माता इस जर् की, बल, आरोग्य ले आता िै।

क्जनके पूजन से आता िै,

समद्धध, उन्नतत पाता िै,

सुर्म करेंर्ी, ध्यान करो,

िो िी कू षमाांडा माता िैं।

स्कां दमाता स्तुतत स्कां दमाता नाम माता,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 28

म को ज्ञानी बनाता,

भतत र्र िांदन करे तो, पुत्र बन िै मोक्ष पाता ।

माता के इस रूप में, श्िेत िस्त्र प्रततरूप में,

तनरोर् को आशीष समल,

िाया समले िर ध में ।

नाम माता पर क्जज्ञासा,

पुत्र के िधन की आशा,

आज माता ने बताया,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 29

पुत्र भी माता की भाषा ।

सेनापतत बनकर खखले, स्कां द तक थे ससलससले, अब यिी िै प्राथना कक पुत्र पद मुझको समले ।

िांदना स्िीकार िो माां, आशीष की बौिार िो माां,

िर जर्ि िी दे सुनाई,

तरी जय जय कार िो माां ।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 30

कात्यायनी माता की िांदना

आज माता युद्ध इच्िु क, खल की धड़कन िै र्ई रुक, कात्यायनी माता ने लाली से,

ककया िै रण में उत्सुक ।

आज आज्ञा चक्र क्स्थत, साधकों के कमा सांधचत, आत्मदानी बने िैं सब,

चरणों में सिस्ि अवपत ।

षषठी चतुभुज देिी दशन,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 31

यि रूप माांर्े बस समपणा , अभयमुद्रा, कमल और तलिार, िरमुद्रा िै दपणा ।

त्रत्रदेि तज प्रतततनधधत्ि िै,

ब्रज में पूक्जत अक्स्तत्ि िै, फलदातयनी कात्यायनी, माता का ये स्िासमत्ि िै ।

माता कृ पा का राज िो, शत्रु न िो िि काज िो, और अरर र्र बन रिा तो

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 32

माता की उस पर र्ाज िो ।

कालरात्रत्र की आराधना

कालरात्रत्र माता विकराल, तीन नेत्र सजते िैं भाल,

रात्रत्र कासलमा से भी काली, सप्तम हदन यि रूप कमाल ।

विद्युत माला, नरमांुड माल,

माता ने आभ ण डाल,

र्दाभ पर चढ़ माता आई,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 33

दषटों का बनकर के काल ।

रततबीज पर करने िार, खडर् काांटा लेके कटार,

रुधधर से अपने भर के र्ाल, र्दान काटी, िो र्या ससधार ।

शुभांकरी करती कल्याण, भततों को दे दया का दान,

अतत भयांकर हदखे दषट को

भततों को िरदम िरदान ।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 34

माता! मेरा रखखए ध्यान, दया क्षमा का िो असभयान, सच्चे सारे भततर्णों को

समले आपसे अभय का दान ।

मिा अषटमी प न

मिा अषटमी िै त्रबल्लौरी, आज आईं िैं माता र्ौरी,

बना रिे िैं िलिा प ी,

साथ में िै मीठी कफल्लौरी ।



हिमाांशु शख

र कृ त दर्

ाा स्तुतत 35

जब कु मारी थी तप कर डाला, तन तप से जब िुआ था काला, माता को इक्च्ित का िर कक, मिा र्ौरी बन र्ईं ले माला ।

चांदन लाल, लाल लें फू ल,

ध , हदया ना जाना भ ,

और भोर् में याद रिे कक,

चना िो काला, यिी कब ।

दर्म नामक था एक क्रू र,

राक्षस अजेय था मद में च ,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 36

लड़कर उसने प्राण र्िाएां,

मातृ शक्तत का ऐसा न ।

शस्त्र की पूजा करते ठान,

यि शक्तत प न िै जान,

नतमस्तक िो कृ पा समलेर्ी, माता के चरणों में ध्यान ।

ससद्धधदात्री स्तुतत

ससद्धधदात्री माता की निमी,

निदर्ाा िै अतत पराक्रमी,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 37

नि दर्ाा की आराधना से,

बनते सारे आत्म सांयमी ।

चारभुजा िै ससि सिारी,

कमल पर भी माां हदखे िमारी, कमल शांख भी कर में राजे, र्दा चक्र से अभय िमारी ।

िर दैत्य का अब शमन कर, नषट सब अततक्रमण कर, नौ हदन में रक्षा धमा की,

और धरा को भी चमन कर ।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 38

धान का लािा चढ़ाना, दान का दीपक जलाना, माता दयालु िै अधधक, सारी कृ पा स्िच्िां द पाना ।

रोर्, कषट का िार क्जनको, फल िाांतित दरकार क्जनको, ससद्धधदात्री माां से समलती,

ससद्धध सब एक बार उनको।

कृ पा माता करें सब पर,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 39

खड़े आखें बांद अब कर,

आराधना सुन ले िमारी, धरा पे िो ससद्धध बढकर ।

जब दष

अिांकारासुर

ट दलन कर के माता,

नौ रूप धार कर के माता,

तनित्तृ अब दष

िुईं दशमी पर तब, ट खोजतीां थी माता।

मतप्राय विलुप्त असुर सारे,

तनमलू ककया सबको मारे,

थे चण्ड मुण्ड और रततबीज,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 40

दर्म भी माता से िार।े

दशिें हदन को विश्राांत धचत्त,

िो कर खोजे आसुरी प्रित्त,

दशमी को माता की भक्तत,

में अिांकार िोर्ा तनित्त।



हिमाांशु शख

र कृ त दर्

ाा स्तुतत 41

# फु टकल स्तुतत

हदल माता का उपिन

करता िूां माता का िांदन,

सुख-दख सारे उनको अपण,

जो देती िि अपना दपण,

करते बेमतलब सब क्रां दन ।

नाश िोंर्े दख तो िै सज्जन,

सुख ना आएांर्े र्र दजन,

माांर्ो या कफर तघसोर् चांदन, निीां श्िेत र्र काया से अांजन ।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 42

चढ़ा रिे सोने के कां र्न, माांर् रिे भर झोली कांु दन,

बेितर िै माता के दशन,

हदल में माता का िो उपिन ।

माता का विचरण

िर ओर घ ते िैं विडाल,

अपिरण ित्या जैसे बिाल, नारी शक्तत पर डोरे डाल, इज्जत उनकी देते उिाल ।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 43

िे माता! कर ऐसा कमाल,

नारी पर िमला तो भ ाल,

महिषासुर सा करना िै िाल, नारी शक्तत िै बेसमसाल ।

िर नारी का उन्नत िो भाल, साक्षात माता उनकी िो ढाल, कु क्त्सत सोचो को कर बेिाल, माता का विचरण िो सकाल ।

माता से पुकार

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 44

माता मेरी इतनी र्ुिार, बचपन मुझको दे दे उधार,

िो समय त्िररत रथ पर सिार, था दीप्त मर्र अब अांधकार ।

िर पल में हदन थे तब िजार, अब हदन में पल बनते पिाड़,

िि स्िणकाल अब भस्म द्िार, यादें बस के िल बेशुमार ।

निरात्रा पर इतनी पुकार, लांबी िु ट्टी का इांतजार,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 45

बचपन करता था िो तैयार, अब हदल में ना उठती बयार ।

घट स्थापन की िो पुकार, पुषपों की करते थे फु िार, तब धूपबत्ती सुर्ांध अपार, घांटी के श्िर करते पुकार ।

पांडाल से आती थी पुकार, अनजान शक्तत थी ये स्िीकार,

िो खीांचे मुझको बार-बार,

िर सुबि मूतता पदे के द्िार ।

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 46

स्नान ककया र्ायब कु मार, पांडाल र्ए माता के द्िार, आएांर्े िापस कब कु मार,

यि प्रश्न िुआ था तब बेकार ।

माता की मूतता से प्रचार, इतना िी सीखा था विचार,

िर दषट पे करना िै प्रिार,

बचपन का शेखर िै सशकार ।

अब दषट यिाां हदखते िजार,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 47

ना कु ि मुझ से िोता सुधार, अब दलन करो लेकर अितार, या बचपन लौटा दे ये र्ुिार ।

दस हदन तक ना िो अिांकार, क्रोध लोभ भी जाए िार, स्थावपत िोता िो सांस्कार, खुद का खुद पर िो एतबार ।

सब अपनी इच्िा ले तैयार, पर मेरी िोटी बस र्ुिार, माता मेरी सुन ले पुकार,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 48

बचपन दस हदन का दें उधार ।

दफ्तर में देिी मा

देिी माां दफ्तर में आईं, आधे हदन की िु ट्टी लाई, बच्चे बन र्ए सारे कफर से, जैसे कोई समली समठाई।

बड़ी रांर्ोली, ििाां बनाई, माता रानी शेर पे आई, फू ल दीप लर्िाया ऐसा,

हिमाांशु शख



र कृ त दर्

ाा स्तुतत 49

सज्जा मांहदर सी िै पाई।

ध जलाया, आरती र्ायी,

नाररयल फोड़ा, बांटी समठाई, माता के सांर् फोटो खखचा, दफ्तर को कफर समली विदाई।

निरात्रा की ध िै भाई,

भक्तत शक्तत साथ में आई, माता का बस िाथ रिे तो, शाक्न्त खुशी जीिन में आई।



हिमाांशु शख

र कृ त दर्

ाा स्तुतत 50